बन्दी

लेखक
श्री कपिलदेव नारायण सिंह
"सुहृद"

बन्दी

...लेज सेक्शन

प्रस्तावना लेखक

राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद

लेखक

श्री कपिलदेव नारायण सिंह "सुहृद"

प्रकाशक

विद्याभास्कर बुकडिपो

चौक, बनारस

प्रति १०००] १९५० [मूल्य १)

प्रकाशक
धीरेन्द्रचन्द्र वीरेन्द्रचन्द्र
विद्याभास्कर बुकडिपो
चौक, बनारस

मुद्रक
वी० के० शास्त्री,
ज्योतिष प्रकाश प्रेस
काशी।

श्री कपिलदेव नारायण सिंह "सुहृद"

बोर्ड आफ सेकन्डरी एज्यूकेशन के मेम्बर
फेलो आफ दि पटना यूनिवर्सिटी के मेम्बर
बिहार प्रा० कांग्रेस कमेटी के
प्रधान मंत्री

बाबू रामचरित्र सिंह जी

एम० एस० सी० बी० एल० एम० एल० ए०

की

सेवा में

गुरुदेव !

आप से मुझ को मिली है धीरता,
शूरता, विद्या, विभव, गंभीरता ।
सूर्य्य से निर्मल गगन से धीर हैं,
सत्य के सुन्दर पुजारी वीर हैं।
आप का सौरभ चतुर्दिक छा गया,
भेंट लेकर भक्त कोई आ गया।
कीजिये पूजा मेरी स्वीकार हो,
धन्य यह कवि-बाल सौ सौ बार हो ॥

—कपिलदेव

दो शब्द

सुहृद जी की कृतियाँ इसके पहले भी पाठकों के सामने आ चुकी हैं और लोक प्रिय हो चुकी हैं। यह नयी कृति बन्दी भी उन के यश और प्रतिभा को बताती है। कविता में ओज है, उत्साह है और जगाने की शक्ति है। बधाई।

१२-६-३९ (राष्ट्रपति) राजेन्द्रप्रसाद

विषय-सूची

वन्दी

"रण-प्रस्थान" देवियाँ बोली
"वीर-वृन्द ! अति मंगलमय हो।"
एक राग, से देश गा उठा-
"जननी जन्म भूमि की जय ॥"

सिंह-वाहिनी ! तुम्हें निमंत्रण
समय-यज्ञ की तैयारी आ।
गरज उठे उन्मत्त वीर
भीषण रक्ताक्त विजय प्यारी आ ॥

एक

उमड़ पड़ी सावनी घटा-सी
युवकों की सेना रण पथ पर।
चमक उठीं अगणित तलवारें
ध्वनित हो उठे अवनी-अम्बर॥

टूट पड़ी वीरों की, टोली
औचक शत्रु-शिविर पर जाकर।
संभल पड़े निज संरक्षण में
अरि भी रण-दुन्दुभी बजाकर॥

जय नादों के साथ युगल सेनाओं
में मच गया घोर रण।
कट कट कर रक्ताक्त धरा पर
गिरने लगे अमित योद्धागण॥

रुण्ड-मुण्ड से भरी भूमि-पर
बहने लगीं रुधिर की धारें।
काँप उठीं दस दिशा समर में
सुनकर धौंसों की धुधकारें॥

प्रलय-काल समुपस्थित लख कर
अरि-मंडल ने कुपित सिंह सम।
छोड़ प्राण का मोह दिखाया
समरस्थल में अतुल पराक्रम॥

उनकी समर-कला से विचलित
सा हो गया सुदीक्षित का दल।
किन्तु, उसी क्षण सेनापति ने
दिखलाया अनुपम रण कौशल॥

वीर सुदीक्षित ने ज्वाला की
लाल लाल लपटों सा बढ़कर।
कर अगणित आघात किया
भय कम्पित अरि-मण्डल को पल भर॥

अगणित खण्डित रुण्ड मुण्ड से
पाट दिया समरस्थल क्षण में।
उसके असहनीय आघातों-
से खलबली मच गई रण में॥

किन्तु, ओज संस्फूर्ति शौर्य्य से
अरि भी हुए युद्ध में तत्पर।
था दुर्भाग्य देश का, सैनिक
सह न सके आघात उग्रतर॥

सुदृढ़ सैनिकों को रखने में
निष्फल हुए सेनापति के श्रम।
भाग चली सेना स्वदेश की
टूट गया अतुलित बल संयम॥

तीन

किया आक्रमण क्रुद्ध शत्रु ने
विजित-पलायित सैनिक दल पर।
जय के बदले चले लोग
सिर पर कलंक-कालिमा लगा कर ॥

विजय-गर्व में फूल उठे अरि
बचा न कोई वीर समर में।
सेनापति गौरव स्वदेश का
"वन्दी" हुआ शत्रु के घर में ॥

वरदान !

लेखनी ! शहीदों की गाथा
लिखने से पहिले जरा सँभल ।
गांधी की छाया बीच ठहर
मच पड़े नहीं भीषण हलचल ॥

भारत जननी तुझ को ध्याऊँ
वीरों की गाथा गाता हूँ ।
प्रतिभा का दे वरदान जननि
पैरों पर शीश नवाता हूँ ॥

ओ दिगम्बरी ! धर कर त्रिशूल
भर दे तो जरा प्रलय-हुंकार।
मेरी इस रचना को पढ़कर
मचे हृदय में हाहाकार ॥

कालिके ! संभल दे वर हमको
मेरी कविता में आग बहे।
कायरता जलकर खाक बने
अरि पर कलंक का दाग रहे ॥

अम्बर से बरसे आग
धरा फट पड़े प्रलय का राग उठे।
इन अंगारों को छूते ही
बुजदिल भी नींद से जाग उठे ॥

घन घन घहरें ये मेघ प्रलय की
एक प्रचण्ड बयार उठे।
भोले भारत का नाश देख
पागल होकर संसार उठे ॥

रजनी के नीले अंचल में
बस प्रलय धूम की धार बहे।
ऊषा—संध्या में रहे खून
घर घर में हाहाकार रहे ॥

छः

गांधी ! ध्याऊँ तुमको इस
पागल पर भी तेरा प्यार रहे।
फुलझड़ियों में हम मिटे मगर
अधरों पर हंसी बहार रहे ॥

घन घोर शान्ति हुँकार तेरी
खूनी वधिकों का नाश करें।
चुपचाप शान्ति के साथ सदा
हम निज लाशों पर लाश धरें ॥

गोली गोले चल पड़े वहे
शोणित लेकर भीषण आंधी।
हम हँसते हँसते मिटे बोलते
धन्य धन्य मोहन गांधी ॥

यह मसि है नहीं लेखनी में
उनकी शोणित की धारें हैं।
ये शब्द शब्द उन वीरों ही की
आहत मर्म पुकारें हैं ॥

निष्ठुर वधिकों पर पाप पंक की
टीका आज लगाता हूँ।
फिर अहंकार के साथ गान
अपनी गरिमा का गाता हूँ ॥

वीणा से

मैं क्या गाता हूं तेरे सम्मुख
है मुझे न इसका ज्ञान?
इस वीणा से निकल रहे हैं
कैसे गायन आज अजान?

स्वर लहरी की कर्कशता पर
विहँस नहीं तू हे सुकुमार।
भक्त अकिंचन को है केवल
तेरा गुण कीर्तन आधार॥

यद्यपि लज्जा भरा कंठ है
शिर रह रह चकराता है।
किन्तु एक के बाद एक स्वर
नाथ? निकलता जाता है॥

विधवा

सुमुखि उदासी की छाया क्यों
आज वाटिका में छाई।
अस्त हुए रवि विपिन बीच यह
गोधूली की अरुणाई॥

आँखों से जलधार बरसती
किस सावन की यह माया।
प्रभु की स्मृति में आज हृदय
आँखों में पावस बन आया॥

बिखर अलक अधर पुट सूखे
कृशता क्यों बढ़ती दूनी।
कौन भला शुभ वचन कहेगा
कुटिया ही मेरी सूनी॥

अरि तपस्विनी! इस समाधि में
यौवन का वध क्यों करती।
मैं अपनी तप ज्वाला से
तेरे गृह में शुचिता भरती॥

नव

शक्ति स्तवन !

जय महाशक्ति !
जय रमाभक्ति !!

जय आदि चक्र चालनी महान
जय, जननि सृष्टि के आदि गान।
जय, आदि प्रलय ! जय आदि सृष्टि
जय, अणु, निवासिनी जय समष्टि ॥

नित नूतन भाव विलासमयी
कल क्रान्ति युते मृदु हासमयी।
शुचि स्वर्गिक शुभ्र प्रकाशमयी
शिव, सुन्दर सत्य समासमयी ॥

अखिलात्मिक सर्व सुमंत्रमयी
शुभ सिद्धि दे मोहक मंत्रमयी।
सुमुखि सित आनना दिव्य लता
जननी जग पालन स्नेह रता ॥

तुम अम्ब उदय गिरि की सविता
करुणा स्वर साधक की कविता।
शिव नाशक चक्षु प्रभा प्रखरा
शरणागत अम्ब ! त्वदीय धरा ॥

कवि से।

हे कवि! क्यों पूछ रहे हो
उकसा कर दर्द कहानी।
भय है तुम सह न सकोगे
अन्तर ज्वाला दिवानी॥

क्या होगा दीप जलाकर
इस अंतक अँधियाले में।
क्या होगा मदिरा भर कर
कवि इस टूटे प्याले में?

है व्यर्थ घोर इस तम में
यह तुच्छ प्रदीप जलाना।
है व्यर्थ बैठ सूने में
आँसू बेजार बहाना॥

जेल में "बन्दी" शहीद

छोड़ विश्व की बिभव लालसा
जीवन का उत्सव सामान ।
सखा-मंडली को रोते तज
तू ने किया किधर प्रस्थान ?

कुसुमित कुंज-कुटीर शून्य कर
असमय इस उपवन को छोड़ ।
मेरे भ्रमर ! उड़े निर्म्मम बन कर
किस नन्दन-बन की ओर ॥

किस स्वरूप के पूर्ण चन्द्र को
देख हृदय में ज्वार उठा ?
गये उधर तुम और इधर
मित्रों में हाहाकार उठा ॥

कंज अभी तो खिले भी न थे
फीका क्यों संसार हुआ ?
अभी अश्रु था कहाँ ? हास में
ही यह जीवन भार हुआ ?

प्रेम-गान गाते थे अलि
मलयानिल मन बहलाता था।
और सवेरे आकर दिनकर
तुम को नित्य हंसाता था ॥

मोद-मधुरिमा में बहते बहते
विलीन संसार हुआ।
अभी अश्रु था कहाँ ? हास
में ही यह जीवन भार हुआ ॥

माँ की ममता, प्रेम पिता का
दिनकर का यह दिव्य दुलार।
शर्मा ! उससे भी सुन्दर है
क्या तेरा स्वर्गिक संसार ?

आओ एक वार आओ इस
विधुर देश को शान्त करो।
वहुत हो चुका वीर! नहीं अव
यों हम को उद्भ्रान्त करो॥

आह, याद है हमें! सखे
सोये थे क्या तुम नींद-विभोर?
मुख-मलीन सव सखे खड़े थे
मृत्यु-सेज के चारो ओर॥

चले गये तुम, रुके न रोके
शासक अत्याचारों के।
रोके कहीं वीर रुकते वन्दी-
गृह की दीवारों के?

लोग देखते रहे खड़े वह
पल में अन्तर्धान हुआ।
बलि वेदी पर नन्हे से
उस जीवन का वलिदान हुआ॥

जाओ वीर, विहँसते जाओ
स्वर्ग-द्वार पर खड़ी खड़ी।
विजय माल ले स्वागत-गायन
गाती देखो इन्द्र परी॥

रवि-शशि की आरती सजा
बालक पूजा को आते हैं।
शर्म्मा ! जाओ शीघ्र स्वयं
सुरपति ही तुम्हें बुलाते हैं॥

कुमार से

हे कुमार तुमने देखा है
कलियों का मुरझाना।
ओलों से ओस कणों से
क्षण भर में आह! विलाना॥

दुष्ट जनों के चरणों से
करुणा का वह टकराना।
उफ! कोमल किसलय पीपल का
देखा तोड़ा जाना॥

अग्नि स्फुलिंग का बढ़ कर
हँस हँस आलिंगन करना।
फांसी पर हँसते हँसते
देखा है तुमने मरना॥

काली घोर अमां में
कर थाम हृदय का रोना।
देखा है कभी इन आँखों से
क्या कभी प्रणय का होना॥

स्वगत

नभ के उडु के हीरों को,
मैं चूर चूर नित करता।
प्याले रच रच कर उन में,
प्राणों का आसव भरता॥

बिखरा देता अम्बर में,
मैं उर के उद्गारों को।
लाता समेट अञ्चल में,
ऊषा के उपहारों को॥

मेरे विभ्राट मुकुट में,
आलोकित अर्क प्रवल है।
पवमान सुरभि ला ला कर,
सजता मेरा संवल है॥

तौ भी संशय, संचय है,
इस कन्था के कोने में।
मैं हँसू हँसी में जग की,
रोऊँ जग के रोने में॥

पर दूर क्षितिज के तट से,
आती मूर्च्छित सी वाणी।
अलका की छवि से सज दे,
भू को कविता कल्याणी॥

पर "ऋत सत्य" संगम पर,
यह आज कहाँ का मेला?
मैं होम रहा ज्वाला में,
जीवन का हविष अकेला॥

अपना आलोक वसेरा,
समदृम उपरति के पर है।
निश दिन तितिक्षु के शिर पर।
शिव का मंगल मय कर है,

यह एक व्योम पर तेरा,
इक चक्रवाल के नीचे।
लख कर विराट छवि फिर से,
क्यों पार्थ नहीं दृग मींचे॥

संगम की धारा में हम,
चल आज खेल लें सजनी।
स्वाहा करते आवृत का,
हम आज बिता दें रजनी॥

"यत्किंच जगत्यां" में क्या,
अणु अव्यय अविनश्वर है।
अव्यक्त पुकार रहा है,
यह गीत उसी का स्वर है॥

उच्छिष्टमेक मन्वन्तर,
लोमश देखो यह लय सा।
शैशव प्रतीक तरता है,
फैला निस्सीम प्रलय सा॥

—※—
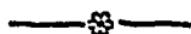
नारी स्तवन

तुम हो पुरातन साधना,
संजीवनी संसार की।
तुम शक्ति रूपिणि मुक्तनि,
माया महा कर्त्तार की॥

तुम आदि सुषमा विश्व की,
तुम आदि शोभा सृष्टि की।
तुम संकुलित छवि हो प्रथम,
सम्पूर्ण व्यष्टि समष्टि की॥

तुम ऋद्धि सिद्धि-समृद्धि नित,
सर्वार्थ – मंगल साधिका।
तुम राम की वामा तुम्हीं,
हो श्याम की वह राधिका॥

तुम कण्व-कन्या वन तपोवन,
में मधुरता ला रही।
तुम मूर्ति महिमा विश्व–
पर माया मनोहर छा रही॥

तुम सृष्टि उर की रागिनी,
तुम मातृ हो अनुरागिनी।
तुम प्रेम की तृषिता सरल,
सौभाग्य मयि बड़ भागिनी॥

तुम नेत्र-रंजनि, मोह भंजनि,
ज्ञान ध्यान – प्रसारिणी।
तुम हो शिवा कैलाश की,
जग तारिणी उपकारिणी॥

तुम विश्व जननि, विशाल हृद,
सर्वत्र सुषमा शालिनी।
तुम लोक लालिनि अति सदय,
नित सृष्टि सुत की पालिनी॥

जय देवि! मातः! सहचरी,
जय जयति लीला मालिनी!
जय मंगले! जय जय शिवे!
जय जयति शक्ति करालिनी!!

मतों की एकता !

कर दिया तूर को दीप्तमान,
जिसका जलवा नाजिल होकर।
है वही दिलों में तेरे भी,
तू भूल नहीं गाफ़िल होकर ॥

दिल की आँखों को खोल जरा,
मस्जिद में वही मन्दिर में वही।
जो निराकार कावे में है ॥
दसरथ के पुण्य अजिर में वही ॥

बस चाह उसी की होती है,
क्या राम कहो अल्लाह कहो।
जो मजहब मिले जहाँ में सभी
को एक उसी को राह कहो ॥

पीते हैं भक्ति सुधा वे भी,
जो इश्क नाम पर मरते हैं।
वैरागी भूल नहीं वे भी,
तन मन न्यौछावर करते हैं ॥

तू तनमयता में एक हुआ
उसने अनलहक पुकार किया।
करता गुनाह में माफ वही
जिस ने तेरा उद्धार किया॥

कुछ ऊँचा चढ़ देखो वन्दे!
दोनों दुनियाँ में पानी है।
हिन्दू मुस्लिम दो फूल खिले
जीवन की एक कहानी है॥

जब आग निगल लेगी तुमको
वह मिट्टी बीच समाएगा।
छुट जाएँगे सामान सभी
कुछ साथ नहीं जा पाएगा॥

खो गई कौन सी चीज़ यहाँ
मूरख किसके हित लड़ता है।
है किस्मत तेरी एक और
अनजाम एक लख पड़ता है॥

निराश जीवन

जगमग ऊषा जगाने आई ,
कलियों ने आँखे खोली ।
ऋतुपति का शृंगार देखकर ,
धधक उठी उर में होली ।।

बिहंस उठे बन विपिन पहन कर,
सुन्दर मादकता का हार ।
लगा लोटने कण कण में नव ।
राशि राशि सुख का संसार ।।

खिली कुसुम कुल थिरकी जलकण ,
मंगलमय हो तुम्हें वसन्त ।
पर क्यों व्यंग हास से उकसाते ,
हो उर के ज्वाल अनन्त ।।

अरमानों की चिता जला मैं-
ने रस में विष घोली है ।
यहाँ मुहरम मची करुं क्या ?
यही वसन्त की होली है ।।

———❀———

भैय्या

इतनी युक्ति कहाँ पाई ?
कब उर में आ डेरा डाला ?
पहना दी किन घड़ियों में ,
बेहोश प्रेम की मृदुमाला ?

कह कर सुधा छिड़कते जाते ,
मादकता की यह ज्वाला !
पीलूँ शीतल होने को ,
होठों से लगा रहे प्याला ॥

कहाँ चले विस्मृत की ,
घड़ियों में ओ-मानस की चोर ।
झांक न चंचलता में मेरी ,
करुण-कामनाओं की चोर !!

———❀———

बन्दी से

तुम्हें भूल जाऊँ कैसे,
हे मेरे तरुण सिपाही?
हे काँटों पर चलने वाले,
अति उन्मादी राही!

तुम वह दीपक हो जो,
फैलता है तम में विमल प्रकाश।
आज तुम्हें पाकर पुलकित हो,
उठा पुनः यह हृदय उदास॥

तुम्हें भूलना आह! प्रेम का,
तिरस्कार करना है।
तुम्हें भूलना पाप-गरल,
से जीवन घट भरना है॥

हृदय हीन हो इसी लिये,
तुमने न हृदय को पहिचाना।
इसी लिये तो "आप" लिखा,
'तुम' का न महत्व कभी जाना।

जो है सदा समीप तुम्हारे।
उस से हटो न दूर सदूर,
निर्वल पर बल का प्रहार कर।
कहला तुम न सकोगे शूर॥

मुक्ति सदन से आये तुम,
स्वागत को कैसे आऊँ?
ज्वाला अब न रही माला,
कैसे पहराऊँ? गाऊँ।

आज तुम्हारे स्वागत के,
लायक भी रहा न प्यारे।
तुम्हें क्या खबर? पड़ा हुआ,
हूँ मैं किस सिंधु-किनारे?

नाविक नौका साथ नहीं,
वह रहा आज एकाकी।
व्याकुल सदा किये रहती है,
सुधि प्रियतमा प्रभा की॥

बहुत दिनों पर इस सेवक की,
भूली याद तुम्हें आई।
मेरा भाग्य! आज पतझड़ में,
ऋतु वसन्त मैं ने पाई॥

ग्रीषम की ज्वाला में जलते,
हुए विसुध-विरही उर को।
सींचा तुम ने आज सुधा–
धारा से इस अन्तःपुर को॥

धन्यवाद किन शब्दों में दूँ,
कवि से हुआ भिखारी मैं।
चूक क्षमा करना आखिर हूँ,
प्यारे प्रेम पुजारी मैं॥

——❀——
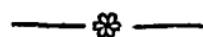
समर्पण

चन्द्र ! तेरी चाँदनी ,
जब से खिली ।
उस समय से ही ,
सुधा मुझ में मिली ॥

हँस रहा आकाश ,
जग सुन सान है ।
आज व्याकुल वेदना ,
से प्राण है ॥

चुन लईं कलियाँ ,
वनों में घूम कर ।
हार सुन्दर रच लिया ,
मृदु झूम कर ॥

भेंट लख हंसता ,
निठुर संसार है ।
किन्तु मेरा भी ,
अनोखा प्यार है ॥

देवता आकाश पर ,
भावुक यहाँ ।
दे रहा भू से ,
तुम्हें उपहार है ॥

———

आग

वन के विमोही वीर !
छोड़ दे प्रिया का मोह,
अन्त है निशा का वागी !
वन के विरागी जाग !!

भ्रान्ति को भगा के शीघ्र,
भर ले रगों में स्फूर्ति–
चल दे रणाङ्गण को,
गाते ध्वंस कारी राग ॥

सोते से जगो रे सिंह !
द्वार पै खड़े हैं शत्रु,
लगने न पावे कीर्ति–
केतु में तुम्हारे दाग ॥

विप्लव बसन्त वीच,
खेल लें बसन्ती खेल।
धधक रही है चारो ओर,
क्रान्ति कारी आग ॥

——❀——
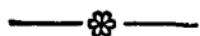
समरस्थली

परम प्रचण्ड आज,
मचती धरा पै धूम।
गूँजता गगन वज्र,
नाद नाश कारी पै॥

ज्वाला सी पसारती,
प्रमत्त योगिनी है जीभ।
ऊधम मचाती उग्र,
भीम करतारी पै॥

भीषिका कराली मृत्यु,
पति - सर्वनाश साथ।
करती किलोलें खूब,
समर अटारी पै॥

विश्व में विछा है चारो-
ओर ध्वंस कारी जाल।
नाचता प्रलय है आज,
कालिका कटारी पै॥

——❀——

तलवार

चंचला सी चमकि,
चकौंधि देती नेत्र ज्योति।
कालिका सी कूदि कूदि,
करती प्रहार है॥

क्रान्ति सी मचाती सारी,
वीर मंडली में घूम।
झपटि झपटि सैन्य,
करती संहार है॥

घन में उड़ाती केतु,
शत्रु - शीश काटि - काटि।
भू पर वहाती शत्रु –
शोणित की धार है॥

आग सी लगाती,
सत्यानाश सी मचाती घोर।
काली सी कराली वीर!
तेरी तलवार है॥

———

प्रलय - वसन्त

वन - वाटिका के सारे,
सुमन अंगारे होंगे।
प्रकृति दुलारी साड़ी,
रक्त से रंगावेगी ॥

विकल मिलिन्द सारे,
छोड़ के भगेंगे कुंज।
फूली सी लताएँ हों,
फणीश फुफकारेंगी ॥

विष की प्रचण्डता ले,
पवन चलेगा घोर।
रक्त की धरा पै,
ऊषा रक्तिमा चढ़ावेगी ॥

सरिता सरों में अग्नि -
ज्वाल की बहेगी धार।
कोयल वनों में,
सर्वनाश - गान गावेगी ॥

——❀——
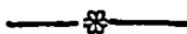
विप्लव की वेली

सेज सुमनों की छोड़,
काँटों पै बढ़ाते पैर।
माता की फकीरी में,
महान मोद पाते हैं॥

सेवा की सुगन्ध से,
प्रमत्त करते हैं मन।
घूम घूम जनता में,
अलख जगाते हैं॥

शलभ सरीखे होम-
कुंड में चढ़ाते शीश।
वरियों में भीरुता के,
भाव उपजाते हैं॥

सुमन खिलाने को,
स्वतंत्रता का शोणित से।
वीरवर विप्लव की,
वेली पनपाते हैं॥

दिखलाना

तन झुलसाना वन,
रवि बरसाना आग।
हृदय दिलाना कर,
हिम्मत हजार की॥

गगन कंपाना घोर,
प्रलय मचाना जाना।
मेरे मरदाना भूल,
बातें सब प्यार की॥

मन विचलाना नहीं,
दूध को लजाना नहीं।
शानदार संतति हो,
कुल शानदार की॥

जाना, लाल ! जाना,
दिखलाना वैरियों को आज।
झाँकी अति बाँकी,
निज तीखी तलवार की॥

माधव से

भूल गये गोकुल में,
तेरा माखन मिश्री खाना।
भूल गये यमुना दुकूल,
पर तेरा आना जाना॥

भूल गये राधा का छिपकर,
कुंजों में मुसकाना।
भूल गये वंशी के खातिर,
तेरा रोना गाना॥

पर प्रकाशमय पाओगे,
मेरा अब भी स्मृति देश।
भूल न सकते कुरुक्षेत्र का,
तेरा भीषण वेष॥

———❀———

आह्वान

देव ! मुंक्त-कुन्तला द्रौपदी ,
बाट तुम्हारी जोह रही ।
प्रेम सूत्र में अश्रु कणों की ,
सिसक सिसक है पोह रही ॥

अहम्मन्य दुर्योधन के ,
महलों से क्या नाता है ।
चलो ! विदुर का शाक ,
झोंपड़े में ही तुझे बुलाता है ॥

कुरु पुत्रों का गर्व आज ,
देखो यह बढ़ता जाता है ।
अरे सारथे ! चलो पार्थ ,
समरांगन में घबराता है ॥

——꧁——

प्रार्थना

भूति से भारत को भर दो,
श्रीहत राजकुँअर के सिर पर मुकुट पुनः धर दो।

विहँस पड़े पंकज फिर सर में,
लगे पुनः फलदल नव तरु में।
परम पिता, जीवन के मरु में,

वहा सुभग सर दो।
भूति से भारत को भर दो॥

तन हो सबल विमल अति मन हो,
गर्व रंग-रंजित आनन हो।
प्रभावान सुखमय जीवन हो,

दयानिधे! वर दो।
भूति से भारत को भर दो॥

——❀——
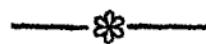
भारत के वीर

तुम हो स्वदेश व्रतधारी,
मां की आँखों के तारे।
त्यागी विरागमय योगी,
सेनापति वीर हमारे॥

तुम कर्मशील यति वर हो,
माता के तनय निराले।
पी देश प्रेम का प्याला,
तुम बने विकट मतवाले॥

बढ़ते कृपाण ले कर में,
डरते जो नहीं समर में।
भगवान! वीर तुझ सा ही,
दे भारत के घर घर में॥

——❀——

एक विनय

सदय हृदय मां! एक विनय !

जन्म जन्म तेरी पावन पद ,
रज का मिले पुनीत प्रणय ।
किया करूँ तव गोद बीच ,
अभिनय ललाम हो सदा अभय ॥

सेवा सुरभि सहित देना मृदु ,
मुझे सुमन सा एक हृदय ।
जो कर दे निज रक्त निछावर ,
होता तुझ पर निरख अनय ॥

—❀—
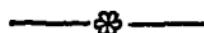
हुँकार

सोता देश जगादे ॥

गरज गरज नगराज आज,
हो निद्रा का अवसान।
विजय–किरीट लिए सजने,
को आए स्वर्ण विहान ॥

तंद्रा अलस भगादे।
सोता देश जगादे ॥

गंगा यमुना उठें घहर कर,
ले ले प्रवल हिलोर।
ब्रह्म पुत्र उमड़े पूरव दिशि,
सिन्धु प्रतीची ओर ॥

घर घर रस सरसादे।
सोता देश जगादे ॥

इन जलते वालू के कण से,
उठ ओ राजस्थान।
इन्हीं कणों से गिन ले,
अपने वच्चों का वलिदान॥

जौहर फिर सुलगादे।
सोता देश जगादे॥

पहन नर्मदा की जयमाला,
उठ ओ विन्ध्य विराट।
एक वार चिग्घार उठो तुम,
पूर्व पश्चिमी घाट॥

रण का नाद सुनादे।
सोता देश जगादे॥

——❀——
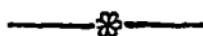
रण में

रथ छोड़ बढ़े कर चक्र लिये,
लपटें भभकीं द्रुत आनन में।
फड़के भुजदण्ड प्रचण्ड अखण्ड,
प्रलय गरजा रण में क्षण में॥

लिपटे पद में प्रभु के द्रुत पार्थ,
लगी कुछ आग प्रभु-मन में।
यह कृष्ण नहीं कुरुक्षेत्र में रे,
छवि लूट विनाश खड़ा रण में॥
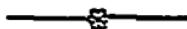
राधिका छवि

कैसे कहूँ पल्लव में,
पद की लुनाई बसी।
गात की गोराई,
विमलत्व कमला के हैं॥

कैसे कहूँ उदर में,
पान की निकाई धँसी।
कंज में समत्व कहाँ,
होठ मृदुता के हैं॥

कैसे कहूँ शशि, तारे,
कान्ति से बने हैं नख।
रदन समूह एक,
संग्रह प्रभा के हैं॥

ऐन हैं सुधा के,
सुख दैन वसुधा के दोनों।
मैन तीर से भी तीखे,
नैन राधिका के हैं॥
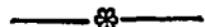
फूल के प्रति

कान्ति न रहेगी न-
रहेगा कमनीय रूप ।
किस सुषमा को ले,
दिनेश को लुभावेगा ॥

सुरभि रहेगी न,
सकेगा रह मकरन्द ।
आँख देखते में,
अलिवृन्द उड़ जावेगा ॥

होवेगी मधुरता-
भण्डार की अनोखी लूट ।
रस न रहेगा, न
रसिक पास आवेगा ॥

मुरझा मरोगे, जन्म-
लोगे इसी वाटिका में ।
किन्तु यह जीवन तव,
स्वप्न बन जावेगा ॥

वियोग में

कृशता लता की आई,
तन में तुम्हारे विना।
अपनी सखी भी जान,
मुझ को न पाती है॥

उर में प्रचण्ड अग्नि,
ज्वाल जलती है सदा।
जानती न प्राण या कि,
प्रीति जली जाती है॥

पापिनी दुराशा नित्य,
छलती मुझे है हाय।
भार से इसके कली,
काया दबी जाती है॥

बार बार रोती हूँ,
घटाने को हृदय का बोझ।
सावनी घटा ये बार,
बार सज जाती है॥

———

वह कान्ति

सन्तत सुधा से सींचे,
तरु को सुचारु चंद।
सुख से विराजे वृक्ष,
छवि उपवन में॥

मन्द मन्द त्रिविध,
बयारि में विहार करे।
फूले कान्ति के जो फूल,
जो ऊषा के अयन में॥

मदन सुमाली कर -
कंज से चयन करे।
मृदुता के धाग में,
पिरोवे जो विजन में॥

काला में सकेगी कर,
ध्रुव ही उजाला किन्तु।
माला न दिखेगी ऐसी,
बाला के बदन में॥

———

वियोग में

विषम वियोग वीच,
जलता निशा में कंज।
पाता त्राण प्रात ही पैं,
रवि उपकार से।

विरह विदग्ध रोती,
दिन में कुमुदिनी पै।
हँसती निशा के साथ,
पति के दुलार से॥

विधि वामता क्या सारी,
मुझ पै पड़ी है आन।
ध्वंस ही हमारा होता,
जाता इस प्यार से।

जीवन समुद्र वीच,
वासिनी विरह ज्वाल।
बुझती बुझाये नहीं,
किसी उपचार से॥

कामना

ऊषा के उपाङ्गण में,
हँसती हैं कलिकाएँ।
मन चाहता है मीठे,
मीठे मुसकाऊँ मैं ॥

त्रिविध समीर मन्द,
गति से पधारता है।
जी चाहता है जग में,
गंध बांट आऊँ मैं ॥

अलि वृन्द आता है,
सनेह का संदेश ले के।
ललचाता क्यारी में,
भ्रमर गीत गाऊँ मैं ॥

पान कर प्रकृति-वधूटी,
की सुछवि — सुधा।
मन ललचाता है कि,
मस्त बन जाऊँ मैं ॥
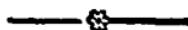
स्नेह संसार की दिवाली

नीरव निशा में होता ,
आँसुओं का तेल यहाँ ।
आह के कणों की होती ,
दिव्य दीप माला में ॥

बातियाँ वियोग की ,
सुकोमल गढ़ाती वहाँ ।
सौरभ सनेह होता ,
जिनका निराला है ॥

वेदना के रँग में ,
रंगाती बाती और दीप ।
दिन में हँसी का किन्तु ,
होता बोल वाला है ॥

कैसा है विचित्र यह ,
स्नेह का जगत यहाँ ।
हृदय जला के प्रेमी ,
करता उजाला है ॥
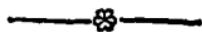
इच्छा

रसिक जनों का नेत्र,
सुख सरसाता खूब।
होता यदि पावस की,
दूब भूमि पर की॥

बरसाता प्रेम - वारि,
सुख से यदि घन होता।
करता शुभ रौर,
अंतरिक्ष के डगर की॥

इन्द्र धनु होता देता,
नभ में पड़ाव डाल।
देख ललचाते लोग,
सुषमा शिखि पर की॥

छविमय बनाता विश्व,
अपनी प्रभा से मैं।
दीप शिखा होता यदि,
प्रकृति के घर की॥
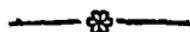
प्रलाप

कल्पना नगर वासी,
कवि मतवाला हूँ मैं।
कमनीयता सदैव,
करती मुझे प्यार है॥

वारिद सरसता का,
वर वारि विन्दु हूँ मैं।
प्रेमिका प्रकृति से,
मेरा प्रेम व्यवहार है॥

काव्य सविता का एक,
तुच्छ प्रेम पात्र हूँ मैं।
जव तक हिय का फूट,
पड़ता उद्‌गार है॥

विश्व वनमाली का,
असक्त भक्त प्रिय हूँ मैं।
कविता कमल पै होता,
अलि का गुञ्जार है॥

———❀———

उत्कण्ठा

सुमन सुगंध या कि,
नभ का सु रव करना।
हे हरि ! बनाना या कि,
प्रेम वर माला में॥

सुन्दर सरस वाटिका,
का श्रृंगार करना।
या कि सौन्दर्य्य करना,
रम्य फूल माला में॥

जन्मभूमि पद पद्म का,
या पराग करना।
या कि सुप्रदीप,
कमनीय छवि शाला में॥

कोकिला का गान,
या ऊषा का मुस्कान करना।
विद्युत - वितान या कि,
मंजु मेघ माला में॥

———❀———

प्रतिज्ञा

एहो ऋतुराज ! हम ,
तेरे प्रेमी पिक अहैं ।
जीवन बितायेंगे तुम्हारा ,
नाम टेरि टेरि ॥

विहरो रसाल वन ,
जाओ मरुस्थली में ।
छोड़ेंगे न पिण्ड तेरा ,
पहुँचेगें हेरि हेरि ॥

फल फूल मेवों की ,
न चाहना हमें है कभी ।
दरस तुम्हारे चाहते हैं ,
हम फेरि फेरि ॥

होके अनुरागी क्यों ,
विरागी बनते हो झूँठे ।
तुम्हीं से रटायेंगे ,
अनेकों बार केरि केरि ॥

चकोर
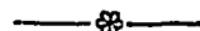
अमिय न जानता है।
अपनी अनूपता को,
जानता उसे जो,
पी के पाता मोद घोर है।

सुजन न जानते हैं,
जानता है मिलन हार।
उनकी सुजनता का,
आनन्द अथोर है॥

वारिद न जानता है,
अपनी मनोज्ञता को।
जान उसे नाचता,
सदैव मंजु मोर है॥

कैसे ठगे जाते हैं,
अनन्य रूपता पै लोग।
चन्द्र जानता न इसे,
जानता चकोर है॥

———

कहानी रह जायगी

चाहता नहीं हूँ काव्य—
बन का बनूं मैं शेर।
आशा ही न नित्य,
कवि रानी रह जायगी॥

मैं ही न रहूँगा तब,
कौन यह सोचे मूढ़।
चुप हो या गूंज मेरी,
बानि रह जायगी॥

कविता छपेगी मेरी,
खूब साप्ताहिकों में।
पुड़ियों में मसालों के,
निशानी रह जायगी॥

छायावाद वाले छाया,
बीच ही रहेंगे और।
टुकड़ों में मेरी ही,
कहानी रह जायगी॥

रह जायगी

जेल शेल वालों की,
वजेगी एक रोज वीणा।
नीरो की न रोज,
मनमानी रह जायगी॥

झोपड़ी हंसेगी और,
फूस खुश होगी यार।
एक दिन पक्कों की,
निशानी ढह जायगी॥

गांधी की लंगोटी का,
प्रभाव देखना जी शीघ्र।
गांव की व्यथाएँ वन,
पानी वह जायगी॥

प्राची में उगेगा भाई,
फिर से प्रचण्ड भानु।
पश्चिम के सूर्य्य की,
कहानी रह जायगी॥

———※———
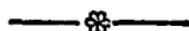
रह जायगी

किस की जलेगी न,
चिता में जिन्दगानी हाय।
अमिट धरा पै क्या,
निशानी रह जायगी॥

मुरझा गिरेगी वृन्त,
छोड़ कलिका न कौन।
किस मानिनी की त्यों,
जवानी रह जायगी?॥

खेलने चले तो खेल,
कफ़नी शिरों से बांध।
भगत यतीन की तो,
सानी रह जायगी॥

ऐ रे शेरे कौम होम,
दे तू शीश वेदिका में।
तेरी भी शहीदों में,
कहानी रह जायगी॥
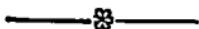
स्वागत

काछनी नहीं है हाफ-
पाइंट बने हैं भव्य।
मुकुट नहीं है हैट,
आज शिर धारिये ॥

नंगे ग्वाल-वालों को,
मिताई छोड़ दीजे नाथ।
मिस्टर मिसों के हाथ,
बीच हाथ डारिये ॥

बाल डान्स कीजिए रास-
का तो है जमाना नहीं।
आज तो मिसों के,
एटिकेट चित्त धारिये ॥

शासन कड़ा है चोरी,
माखन न कीजे नाथ।
होटल खुले हैं वेगि,
"पिन्टू" में पधारिये ॥

——❀——

तुलसी स्तवन

भक्ति भामिनी का कौन,
भूषण सजाता भव्य।
कौन भारतीयों का,
करता भारती का भान ? ॥

दोष दुख दारिद्-दलों,
को दलने को दिव्य।
देशवासियों को कौन,
देता दिव्यता का दान ?

कौन गरिमा का पाठ,
विश्व को पढ़ाता कहो।
देश को करता कौन,
कविता सुधा का पान ?

किस की कला से काव्य,
लसता कहो तो यदि।
देव कवि तुलसी न,
गाते स्वर्गीय गान ॥

भक्त की लालसा

जब मैं बजाऊँ वीन,
प्रेम लीन होके देव।
तब बन जाना तुम,
तान मेरे गान की॥

जब मैं बनाऊँ हार,
प्यार से प्रसून चुन।
तब बन जाना तुम,
चाह मेरे प्रान की॥

जब मैं सजाऊँ नाथ,
तेरी अर्चना के साज।
तब बन जाना तुम,
मूर्ति मेरे ध्यान की॥

जब मैं बुलाऊँ प्रभु!
तुम न लगाना देर॥
टेर सुन आना और,
जगाना ज्योति ज्ञान की॥

——

काल सा

ज्वाला की शिखा सी,
कौंध जाती विजली कठोर।
वरस रहा है मेघ,
अगणित व्याल सा॥

प्रलय घड़ी की घोर,
गर्जना लिये हैं आज।
काला काला मेघ,
गगनस्थ विकराल सा॥

घहर घहर घनघोर,
घन रारे कर।
चारो ओर भू पर,
विछा है तम जाल सा॥

भूकम्प पीड़िता धरा पै,
आज निर्मोही।
पावस ससैन्य वन,
आया आज काल सा॥

—❀—
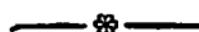
जह्नुजा

शंकर जटा से कूद,
शैल पति गोद गिरि।
गिरि से गिरि तो।
वन्य भूमि तल धाई है॥

पावन प्रताप तापी,
हरिद्वार आदि वीच।
श्यामल धरा पै,
कंठहार वनि छाई है॥

भूपति भगीरथ के,
पुण्य की पताका भव्य।
पापियों के पाप वूंद,
वूंद में नशाई है॥

जह्नू जघन से जो,
मुक्ति पायी अति मंजु।
जाहिर जहान वीच,
जह्नुजा कहाई है॥

———※———

तुलसी स्तवन

सगुण उपासना की,
महिमा सुनाता कौन ?
गुण भक्ति-सुन्दरि का,
कौन करता बखान ॥

विमल विराग की,
प्रभा का खींचता कौन चित्र।
प्रेम रागिनी की ओर,
खींचता कौन विश्व कान ?

हिन्दी वाटिका में,
मानसर निर्माता कौन।
कौन फहराता मातृ,
भाषा का विजय निशान ॥

विश्व कविता की कौन,
सुषमा बढ़ाता यदि।
देव कवि तुलसी न,
गाते स्वर्गीय गान ॥

क्रान्ति कामना

सिंहों सा गर्जन कर कूदूं
उच्च अगम गिरि माला से
लाल लाल लपटें हो कर में
बढ़ूँ धधकती ज्वाला से ॥

भ्रू भँगों से विश्व हिला दूं
बरसे ज्वालामय अंगार।
उथल पुथल हो घोर प्रलय हो
चिता बने सारा संसार ॥

मैं हूँ अभय कौन रोकेगा
मेरा निश्चित मार्ग विशाल ?
विधि की सृष्टि मिटेगी क्षण
में ला दूंगा ऐसा भूचाल ॥

—❀—
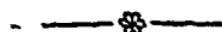
भारतेन्दु के प्रति

भारत की भारती
ताकती भारतेन्दु की राह
नहीं अघाती कवे !
पान कर तेरा काव्य प्रवाह ।

वायु बीच गूंजती तुम्हारी
वीणा की झंकार ।
है हो रहा आज तक
मुखरित कवियों का संसार ।।

आओ काव्य कली के सौरभ
आओ हे श्रीमन्त
हिन्दी के वन बीच जरा
सरसा दे पुनः वसन्त ।।

हे उदार कविता के स्वामी
नव रस कला प्रवीण
आकुल श्रवण खोजते बजती
कहां तुम्हारी वीण ।।

—— ❀ ——

शहीदों के प्रति

हीरे सा जीवन इस जग में,
होता यश का मोल।
वीरो! तुम ने मृत्यु वधू,
का प्यार चखा अनमोल॥

नन्हें से जीवन का
मां की वेदी पर बलिदान
इसी लिये तो सखे!
तुम्हारा करते हम सम्मान॥

टूटेंगी, अवश्य टूटेंगी,
मां के पग की कड़ियाँ।
बरस चुकी हैं जब बन्दूकों,
से तुम पर फुलझड़ियाँ॥

——ॐ——
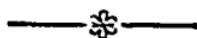
कविता

अरुणोदय से प्रथम चमक ,
उठता प्राची का स्वर्ण-सुहाग ।
वर्षागम से प्रथम गगन में ,
उठता गूंज जलद का राग ॥

फल से प्रथम मंजरी से ,
झुक जाती आमों की डाली ।
प्रथम मिलन से उत्सुकता से ,
भर जाती हिय की प्याली ॥

मेरे मानस के प्रदेश में ,
उठता भावों का तूफान ।
उर का बांध तोड़ बहती ,
भावुकता बन कविता अनजान ॥
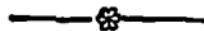
प्रेमी

जो गुलाब से गालों,
की लाली पर मरता।
मुक्तामय अधरों से,
कोष हृदय का भरता॥

तारों से सुन्दर,
नयनों से ले चिनगारी।
जो फैलाता हृदय देश,
में मृदु उजियारी॥

उसके उर की आग,
बुझेगी समय पवन से।
जब उतरेगी विभा,
प्रेमिका के जीवन से॥

——❀——

दीवाना

अकरुण कर से हृदय न छूना
छेड़ नहीं तंत्री के तार।
पल में प्राण विकल रोवेंगे
कर भीषम तम हाहाकार ॥

निठुर कहूँ जीवन की गाथा,
हाय, अरे मैं दीवाना।
दर दर घूम रहा तेरी,
मस्ती का लेकर मैखाना ॥

प्याली पर प्याली चलती है,
पर होता संतोष नहीं।
साकी ! एक वार कर दोगे,
क्या फिर से बेहोश नहीं ?'

ढले आज बस एक पात्र में,
मधु से भरा ललित यौवन।
और नशा में उतरा जाये,
पीने वाले का जीवन ॥

———❀———

कवि स्तवन

किस का रस पी अलिनी उर की,
कविराज तेरी मतवाली हुई।
किन रश्मियों से परिपूरित हो,
प्रतिभा जग की उजियाली हुई॥

विकसे वर पंकज मानस के,
कलि भार से हीनत डाली हुई।
नव जीवन दौड़ पड़ा नस में,
कविता तव अमृत प्याली हुई॥

कब जाने 'प्रवास' हुआ 'प्रिय' का,
बिलखीं कब जाने सुहागिनियाँ।
यमुना जल आँखों से नीर हुआ,
कब जाने लता हुई नागिनियाँ॥

मुरलीधर की मुरली न यहाँ,
न यहां अब वे ब्रज भामिनियां।
पर काव्य कदम्ब तले अब भी,
रच रास रहीं अनुरागिनियां॥

——✿——

अनुरोध

उस गुलाब का हूँ परागमैं,
विधवा के दिल की वह आह !
मुझे यहां से ले जाओ अव,
वन कर शीतल पवन प्रवाह ॥

पतझड़ का सूखा पत्ता हूं,
गिर जाऊँ तो खेद नहीं।
मुझे जला दो अपनी धाहों,
में दावानल वन कर ॥

छोटी सी निर्झरिणी हूँ मैं,
वहता फिरता इधर उधर।
शीघ्र मिला लो अपने में तुम,
बह कर वह विराट सागर ॥
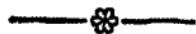
घायल-अरमान

तारे भी मुझे निरख कर,
अविरल आँसू बरसाते।
मेरी गहरी सांसों से,
तरु पल्लव भी हिल जाते॥

मेरी सुन करुण कहानी,
पत्थर का हृदय पिघलता।
निर्झरिणी भी रो पड़ती,
मेरी लख मौन विकलता॥

क्यों ऐसे हतभागे को,
नाहक हे प्रिय रुलाते।
क्यों घायल अरमानों पर,
हंस हंस कर तीर चलाते॥

———※———
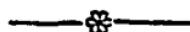
बिहार

ओ बिहार – वसुधे निज दिल,
से द्वार आज टुक तो खोलो।
वीर बहादुर मरदानों की
टोली तेरी जय बोलो ॥

चुन चुन आज जगा लें हम
अपने अतीत के वीरों को।
चन्द्रगुप्त को अमर कुमर
से महा विकट रणधीरों को ॥

शेरशाह चिंघार मार कर
जाग पत्थरों से सोकर।
विधवा बुला रही यमुना तट
दिल्ली युग युग से रोकर ॥

रजकण में जो गिरि ध्वजा है
उसे उठाने को आओ।
जय बिहार जय जय बिहार
के राग सभी पुलकित गाओ ॥

अनुरोध

हे उदार! जाने दे उस पार ॥
मृग तृष्णा ने मुझे फंसाया,
प्रवल मोह ने जाल बिछाया।
माया ने पग पग भटकाया,
नश्वर छवि पर नयन लुभाया।
छला गया मैं धोखा खाया ॥

जग में वारम्वार वार।
हे उदार! जाने दे उस पार ॥

मेरे संग के रहने वाले,
मेरे प्यारे भोले भाले।
चले गये निष्ठुर कर से सव,
पड़कर क्रूर काल के पाले।
रहा अकेला मैं अनाथ सा ॥

हाय दीन आधार।
हे उदार! जाने दे उस पार ॥

मुझे देख हंसते हैं उड़गण,
अट्टहास करते उदण्ड घन।
किलक रही हैं चतुर्दिशाएं,
इठलाती हैं कलियाँ नूतन।
होता है जीवन प्रतीत अब ॥

व्यर्थ साधना भार।
हे उदार! जाने दे उस पार ॥

साथ छोड़ दे अहंकार तू,
विश्ववासनाएं आसार तू।
अन्धकार हट जाओ मन से,
कपट और कुत्सित विसार तू।
हो जाने दे "सुहृद" मुझे अब ॥

अरे! ममत्व विकार।
हे उदार! जाने दे उस पार ॥
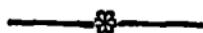
स्वगत

तू मेरा है वह सितार जो
वजता है करुण – स्वर में।
तू है वह विश्वास सदा जो
जागृत है उर अन्तर में॥

तू मेरा है अचल साधनाओं
का अति पवित्र आधार।
तू मेरा है सौख्य मधुर वह
है जो सुख का पारावार॥

तू है वह सौन्दर्य्य चमकता
जोवन जीवन ज्योति समान!
तू मेरा वह सुमन अनोखा
जो है मधुर सुरभि की खान॥

तू मेरा सुन्दर प्रभात है
जो अम्बर का है शृंगार।
तू मेरा है हृदय सुकवि सा
करता हूं जिस को मैं प्यार॥

तू जीवन की ज्योति प्राण के,
प्राण हृदय की छवि हो।
मैं तेरी कविता अलवेली॥
तू मेरा नव कवि हो॥

ध्यान

इन वन कुसुमों के भीतर ,
तुम सौरभ वन न निवास करो ।
ऊषा और सन्ध्या किरणों ,
के साथ न हाय विलास करो ॥

नील-क्षितिज-तट नक्षत्रों में ,
जाकर अव न मिलो हे प्राण ।
कूल कूल पर हे कोमल-तन ,
अव न मनोहर रास करो ॥

अखिल-सृष्टि की मधुर-माधुरी ,
ले कर यहाँ उतर आओ ।
आँख मूँद लेता हूँ मेरी ,
कविताओं में छिप जाओ ॥

—❀—
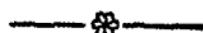
कवि की कल्पना !

कहते हैं वह लाल लाल था,
चन्दा का टुकड़ा था।
कहते हैं सब बड़ा सुहावन,
उस का वह मुखड़ा था॥

कहते हैं था सुन्दर हाँ,
सुन्दर सुकुमार सलोना।
कहते हैं जगमगा उठा था,
घर का कोना कोना॥

पर मां उसकी भोली छवि
को मैं तो नहीं निहार सका।
और गोद में विठला कर,
उस पर सर्वस्व न वार सका॥

चित्रकार से माँग चातुरी,
उसका . चित्र वना लूँ।
कवि की माँग कल्पना,
कविता रचूँ अनोखी गालूँ॥

—ॐ—

मंगला चरण।

आदि सृष्टि ! जय आदि-प्रलय।
ज्योति-विन्दू ! जय, जय अव्यय ॥

शुभ मुहुर्त्त शुभ लग्न आज है क्या मांगू वरदान प्रभो !
शिखर पतन मन्दिर का पथ की धूलों का उत्थान प्रभो ॥
राम ! अश्रु पर छोड़ पल भर विद्युल मुस्कान चलो।
दीन भक्त की विमल आरती, वुला रही भगवान चलो !!

उपवन ने कर घृणा मुझे
ठुकरा फेंका वन फूलों में।
मेरे देव ! उतर मन्दिर से
वांह गहो आ धूलों में ॥

अनुरोध

जीवन की इन प्यार भरी घड़ियों,
में तुम आया न करो।
गायन समझ करुण क्रन्दन,
सुनने को ललचाया न करो॥

सुलझी सी सुख की घड़ियों,
को आकर उलझाया न करो।
क्षण भर आ जीवन भर की,
वेदना जगा जाया न करो॥

बरस रही आँखें जीवन में,
वर्षा ऋतु लाने वाली।
जाग जाग मेरे उर के,
घावों की प्यारी हरियाली॥

तेरे विपिन वीच चुपके से,
प्रणय कुसुम चुनने आया।
सुमन माल से बाँध हमें,
रे जाग जाग सोते माली॥

——❀——
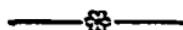
कवि से

किस विरहिणि के दर्द भरे,
दिल का ले दर्द छिपे सुकुमार।
या अलका की यक्ष-संगिनी,
के नयनों के दो उपहार॥

कवि किस से सीखे हैं तुमने,
करुणा के ये मधुमय गान?
रोते ही बीता है जग को,
जब से छेड़ी तुमने तान॥

सागर है सन्तप्त शोक से,
आकुल हैं वसुधा के प्राण।
कहाँ मोद अब रहा विश्व में,
छाई दुख की ही मुसकान॥

उठो! आज उल्लास वीण ले,
गा दे वह मन मोदक राग।
थिरक उठे संसार श्रवण कर,
तेरा मृदु आनन्द–विहाग॥
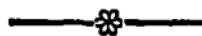
नादान-अलि

मरु के तापों से अकुला,
जीवन की दोपहरी में।
तनिक शान्ति पाने को,
आया था छाया गहरी में॥

काँटों की इस कुटिल सेज का,
मुझे नहीं था ध्यान।
मृग न जानता था कि,
छिपा है नाश वीन-लहरी में॥

सुमन माल का धाग आज,
तक्षक वनकर डँसता है।
अलि न जानता था कि गरल,
फूलों में भी वसता है॥

——❀——
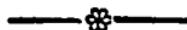
व्यथित उर

आ इस उजड़े से उपवन में ,
मेघ अरी मतवाली आ ।
आ मेरे उदास नभ पर ,
संध्या की हलकी लाली आ ॥

आ इस अंधकारमय मेरे ,
जग में राकापति सुकुमार ।
आ अपने प्यारे अतीत की ,
याद दिलाने वाली आ ॥

बरस रहीं आँखें जीवन में
वर्षा ऋतु लाने वाली ।
आ जा ! अरी व्यथित उर ,
के घावों की प्यारी हरियाली ॥

—— ❀ ——

जीवन-धन

दो, हाँ, दो, अपना हृदय दान ,
जीवन-धन हे करुणा निधान ॥

हो सकल साधना सार तुम्हीं ,
मानस मन्दिर का प्यार तुम्हीं ।
स्वप्नों का सुख संसार तुम्हीं ,
आशाओं के आधार तुम्हीं ॥

सर्वस्व तुम्हीं सुन्दर सुजान ,
जीवन-धन हे करुणा निधान ॥

तुम सुधा सलिल का प्याला हो ,
मादक मन हरने वाला हो ।
कल कवितामय मतवाला हो ,
निरुपम हो और निराला हो ॥

माला है मन की मोदवान ,
जीवन-धन हे करुणा निधान ॥

———❀———
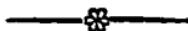
उद्यान-वचन

मधुर, मनोरम मध्य भुवन के,
हूँ मैं एक अनूपम बाग।
पतझड़ है मेरे फिर जग में,
हूँ वसन्त का मैं अनुराग॥

जग के दुष्ट यन्तुओं ने है—
मुझ पर अत्याचार किया।
निविड़ निशा में करी चोरियाँ,
दिन में भीषण मार हुआ॥

किस ने कसर किया है मेरी,
मंजुलता के हरने में?
मजा मिला है किसे नहीं,
विध्वंस हमारा करने में?॥

जिसने देखा वही लुभाया,
लिया तोड़ मेरा कुछ फूल।
मुझे मिटाने पर तुल कर के,
दिये न किस ने मुझको शूल॥

मिटा न फिर भी मैं जीवित हूँ ,
मेरा भाग्य निराला है।
विकट घड़ी में माली मुझको ,
निज शोणित से पाला है ॥

उन दनुजों के आघातों से ,
जब जब मैं म्रियमाण हुआ।
दया, लेख, श्रद्धा सम माली ,
मेरे हित बलिदान हुआ ॥

———:———
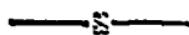
इन्द्र धनु

छवियों का सुखमय समूह सा,
यह किस बाला का शृंगार?
गगन नीलिमा पर छिटका है,
सतरंगे मोती का हार ॥

सुखद स्वप्न छवि से अनुरंजित,
मृदुल कल्पना सी अनजान।
झलक रही नभ के आसन पर,
जगती की पहिली मुसकान ॥

वज्र बाण वासव का इस पर,
चलता है ऐसा न कहो।
अरे यहीं होता है मनसिज,
के मादक शायक का संधान ॥

प्रकृति नवेली की मृदु रंजित,
मन मोदक है भौं सुकुमार।
जिस का सरस विलास जगाता,
उर उर में उत्क्रान्ति महान ॥

———❀———
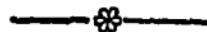
गीत

काल विहंगम पंख पसारे।
महाशून्य में विपति मार्ग से उड़ता जाता क्षितिज किनारे॥

कितने युग की जीर्ण कथाएँ।
वैभव सुख दुख तीव्र व्यथाएँ॥

कितने चित्र भिन्न रंगों के कितने अस्फुट सपने प्यारे॥

अमित पवन उत्थान घनेरे।
युग युग के अनुभव वहुतेरे॥

उड़ते जाते साथ पवन में मदोन्मत्त औ दीन वेचारे॥

वीते सुख, दुख के दिन आये।
रत्न गवाँ हम रज कण पाये॥

इन पंखों पर चढ़ उड़ जाते क्यों न प्रिये! ये द्वन्द हमारे
काल विहंगम पंख पसारे॥

———३———

यौवन की लाली

चन्द्रमा गरल प्याला है,
ये तारे हैं अँगारे।
इन से लिपटे हैं जाकर,
दुखिया दिल के उद्गारे॥

वे फूल शूल मानों हैं,
शायक हैं किसी कुटिल के।
घायल करने वाले हैं,
सुकुमार तड़पते दिल के॥

सांपिनी है उसने पाली,
लतिकायें यौवन वाली।
तीखी हैं इन छवियों के,
मादक यौवन की लाली॥
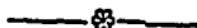
———❀———

प्रेमी

जो गुलाब से गालों की,
लाली पर मरता।
मुक्तामय अधरों से,
कोष हृदय का भरता॥

तारों से सुन्दर नयनों,
से ले चिनगारी।
जो फैलाता हृदय देश,
में मृदु उजियारी॥

उस के उर की आग बुझेगी,
समय पवन से।
जब उतरेगी विभा,
प्रेमिका के जीवन से॥

—※—
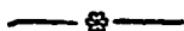
वि० प्रा० सा० सम्मेलन के सभापति

पं० जनार्दनप्रसाद झा का स्वागत

मधु मोद दिन आज मन मोद भरू रे ।
रवि रूप लखि प्रात अलि गूंज करू रे ।।

अतिथि चरण यूत तट तव धन्य देवि ।
सरयू लहर सिक्त करि श्रान्त हरू रे ।।

मोरध्वज याद करि उठहु चिरान आज ।
सहित सनेह सौम्य पद पद्म परू रे ।।

वहहु ललित गंध सहित पवन मन्द ।
मुदित अतिथि वन्दि विहंग उचरू रे ।।

नगर उछाय आज जन जन मुद भोर ।
उगउ उजाड़ वीच शुभ कल्प तरू रे ।।
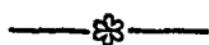
अन्तिम वार

नहीं जानता हूँ कृतज्ञता,
कैसे प्रकट करूँ अपनी।
तव महानता में जीवन की,
लघुता हाय, भरू अपनी॥

मैं ने की याचना और तू,
सन्तत वह देते आया।
तेरा मधुर प्रसाद नाथ यह,
दीन सदा लेते आया॥

आज मांगता हूँ अपने,
को ही मुझ को देदे प्यारे।
हृदय पुकार रहा केवल तू,
मेरा ही कहला जा रे॥

सभी विश्व के लिये कहीं तू,
मेरे प्यारे खो जा।
आओ तुझे छिपा लूँ उर में,
मेरे ही बस हो जा॥

मादक मृत्यु

भर दे ! हा, भर दे अपने ही ,
हाथों से विष की प्याली ।
पी लूँ जरा फैल जाए ,
इस जीवन में अक्षय लाली ॥

हो जावे अन्तरतम की इस ,
घोर जलन का ऐसा अन्त ।
एक वार फिर बिहस पड़े ,
उपवन में प्यारा सरस बसन्त ॥

हिचक रहे क्यों इस ज्वाला-से ,
जग में क्या दुख कर है ?
ऐसी मादक मृत्यु लाख जीवन ,
से भी सुख कर है ॥
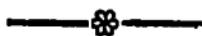
प्रथम परिचय

मेरा स्वर्ण काल था तब,
जब हुआ न था तुझ से परिचय ।
क्रीड़ा-कौतुक मोद-मधुरिमा,
से था जब परिपूर्ण हृदय ॥

किन्तु अचानक मुड़ा हमारा,
जीवन नौका का पतवार।
उर उपवन कँप उठा चली,
जब धीमी गति से मधुर बयार ॥

देखी फिर मैंने भी अपने,
नभ पर ऊषा की लाली।
अरे फूल कर विहस उठी,
मेरे जीवन तरु की डाली ॥

आज

चित्रकार ! इन कलियों के ,
यौवन पर हृदय लुटाओ ।
कविवर ! इन के अल्हड़पन पर,
कविता अमर बनाओ ॥

गायक ! इन के नव विकास का ,
गीत मनोहर गाओ ।
प्रेमी ! आज प्रेम से बढ़कर ,
इन को गले लगाओ ॥

नटवर ! अखिल-विश्व रचना ,
को इनमें आज मिला दो ।
और प्रलय के बीच इन्हीं सी ,
कलिका एक खिला दो ॥

———※———

शून्य जीवन

मचल गया मन गिरे अश्रु तो ,
हुआ वड़ा अपराध ।
हार गया मैं छिपा न पाया ,
टुक रोने की साध ॥

साध हीन की साध यही ,
इस से नाता न छुड़ाओ ।
समझ भिखारी ही सनेह से ,
कम्पित हाथ वढ़ाओ ॥

तेरा चुम्बन - चिह्न हाय ,
इस अन्तिम मधुर मिलन का ,
होवे आश्वासन मेरे एकान्त ।
शून्य जीवन का ॥

———※———

वन्दी।
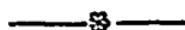
अन्वेषण

हाट बाट खोजा पर तेरा,
पता नहीं मिलता प्यारे।
श्रान्त पथिक वन भटक रहा हूँ,
अपना रूप दिखा जा रे॥

वृन्दावन के तरु-कुंजों में,
मिले न मुझको बनवारी।
अयि गलियाँ गोकुल की आए,
क्या न यहां वे गिरिधारी॥

अब भी कर्ण-कुहर में प्यारे,
गूंज तुम्हारे गान रहे!
पर पछताता हूँ कैसे,
गायक यों अन्तर्धान रहे॥

क्षीरोदधि में विष्णु नहीं है,
इंद्रकुंज में लता नहीं।
ढूँढ़ चुका कैलास, किन्तु है,
वैद्यनाथ का पता नहीं॥

अश्रु–अर्घ्य आँखों में लेकर ,
और करो में जीवन–फूल ।
ढूँढ़ रहा मैं तुम्हें अकेला ,
भागीरथि–सरिता के कूल ॥

इधर उधर मैं खोज थका ,
तुम कहीं नहीं मिलते प्यारे ।
किस दुनियां में भूल पड़े हो ,
मेरी आंखों के तारे ॥

अरे तुम्हें क्या ज्ञात हमारे ,
प्राणों में क्या पीड़ा है ।
प्रेम हृदय में हलचल करता ,
मची प्रलय की क्रीड़ा है ॥

चित विकल है साश्रु नयन हैं ,
धड़क धड़क उठती छाती ।
तेरी सुधि आ बार बार ,
है नमक जले पर बिखराती ॥

रोता हूँ मैं सूनेपन में ,
क्यों न निठुर अब भी आते ।
अपनी मादक सुन्दरता के ,
लिए हाय क्यों कलपाते ॥

किन्तु हाय तुम क्यों जानोगे,
पीड़ा का उन्माद सखे।
निर्धन 'सुहृद' कभी रहता है,
क्या दुनियाँ को याद सखे॥

तुझ पर कभी न बीती निर्दय,
मुझ पर बीत रही जैसी।
फिर क्यों समझेगा कि वेदना,
होती विरही की कैसी॥

किसान
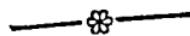
भारत भू के अवलंब किसान,
कब आशा - नभ पर फूटेगा उज्वल स्वर्ण विहान ?
इस अति सघन तमिश्र निशा में है पथ क्लेश महान।

कौन ज्योति दिखलायेगी निर्दिष्ट लक्ष्य छवि मान ?
दुर्बल कंठों से पुकार तुम हुए हाय म्रिय मान,
जाने कहाँ नींद में भूले करुणा निधि भगवान॥

——※——
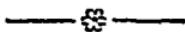
कांग्रेस स्तवन

जय काँग्रेस ! जननि ! हितकारी भ्रमभय द्रुत हरने वाली ,
जयति देवि ! पैंतीस कोटि के मन प्रसन्न करने वाली ॥
भारत–सुते ! कीर्ति–किरणों से भूतल को भरने वाली ,
जय खद्दर धारिणि ! जगदम्वे ! पापों से लड़ने वाली ॥

देवि ! अहिंसा–मूर्ति ! सत्य की ,
प्रेम पुजारिन नमो ! नमो !!
तीस कोटि भारत वासी की ,
जननि भिखारिन नमो ! नमो !!

——❀——
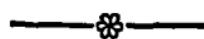
अचानक

शून्य दिशा थी, नीरव निशि थी,
अलस पुलक की मृदुल हिलोर।
नील गगन था, राकापति थे,
निद्रित था यह विश्व विभोर !!

भय से झुके दीख पड़ते थे,
वन के वेलि-विटप चुप चाप।
उसी समय मानस मन्दिर में,
आया तू मन मनमोहक चोर ॥

सजग न हो पाया अर्चन में,
सज न सके पूजा के थाल।
धूल-धूसरित आसन पर तू,
आ बैठा मेरा भूपाल ॥

—※—
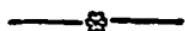
अनुरोध

उठती हुई उमंग-वेलि पर,
ओले वरसाया न करो।
उर-उच्छ्वास रोक दुखिया को,
अकरुण ! कलपाया न करो॥

आज तूलिका ले खींचूंगा,
हृत्पट पर मैं तेरा चित्र !
भभक न उठे अरे निर्म्मम,
ज्वाला मुखि उकसाया न करो॥

क्षण भर की इस मधुर शान्ति से,
मुझ को लाभ उठाने दो।
सर्व नाश की आग न जागे,
कुछ तो मन बहलाने दो॥

———❀———
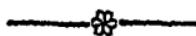
फूट-पड़ी

कुसुम-सुगन्धित मधुवन में,
वृन्तों से गिरे सुमन प्यारे।
करतल फैला दौड़ पड़ा मैं।
यों कहते-आ—रे ! आ—रे ॥

सुरभि उड़ी पंखड़ियाँ मुरझी,
सूख गया मकरन्द।
रोने लगे विषाद युक्त हो,
इस निर्म्मल नभ के तारे ॥

व्याकुल मेघ गरजते आये,
लगी थिरकने सरिताएँ।
फूट पड़ी कण कण से कोमल,
हँसी-रुदन की कविताएँ ॥

——❀——
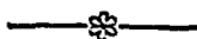
मेरे प्रिय !

तिरस्कार की ज्वालाओं को,
मैं कैसे सह पाऊँगा ?
रोको इस खरतर प्रवाह को,
तिनके सा बह जाऊँगा ॥

नाथ ! तुम्हारी तीव्र आँच में,
काँच सरिस ढल जाऊँगा।
ओ दिनेश ! असहाय, हाय, मैं,
तुहिन सरिस गल जाऊँगा ॥

मेरे प्यारे सुमन ! विहँस,
फैले जगती में ज्योति महान !
मिट जावे क्षण भर में ही,
बस मेरी यह पीड़ा नादान !!

———❀———

समझा दे !

आँसू की इस सरस झड़ी में,
जाग जाग री हरियाली।
आ, उजड़े वन में दुर्दिन के,
मित्र अरे, प्यारे माली ॥

कूक तनिक सूखी डालों पर,
कूक अरी कोयल प्यारी।
मधुप जरा गा, दे बीते,
दिन की वे गाथाएँ सारी ॥

अंधकारमय मेरे नभ पर,
हंस दे जरा चन्द्र प्यारे।
ऐ मुरझाते सुमन व्यथा की,
कथा तनिक समझा जा रे !!

——❀——
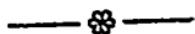
श्रान्त भक्त !

शिथिल हुए हैं प्राण,
पार करते तेरा जलयान हरे।
शूल-समूहों पर घसीटते,
क्यों मेरे भगवान हरे !!

तरल तरंगों में वारिधि की,
क्यों तू फेंक रहा मुझ को।
तेरी बातों में आ कर हाँ,
बना बहुत नादान हरे ॥

कपट भरे तेरे अन्तर की।
चाल कौन पहचानेगा ?
ज्वालाओं में जल जल कर भी,
कौन तुझे निज मानेगा ?

——❀——
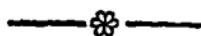
ठहरो

रुके वायु का वेग, रुके —
सरिताओं का यह कल कल गान।
रुके धरा की ध्वनि, सुनील,
नभ व्याप्त सरस सँगीत महान ॥

भौंरों की गुञ्जार रुके ओ,
बुदबुद का उत्थान पतन।
मंजरियों में कोयल की,
क्षण भर को रुके अनोखी तान ॥

शान्ति ! शान्ति !! हो महाशान्ति !!!
जगती का रुके मधुर संगीत।
हृदय द्वार खुल गया निकलती,
हैं मेरे आहें सुपुनीत ॥

—:—

एकलौनी

अनोखा प्यार

कौन गिरेगा भला कहो,
यों तज अपना आदर्श।
भटका रहा पथिक क्यों तुझ को,
यों निज हर्ष-विमर्ष?

मधुप न ऐसा प्यार चाहिए,
जिस से सुमन मुरझा जाये।
मादकता के मधुर भार से,
शाखाएँ यो दब जाये॥

प्यार नहीं यह मार तुम्हारी,
भला कौन सह पायेगा?
'कंचन की कड़ियों से भी,
यों अपने को बँधवायेगा?

———
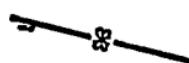
परिवर्तन

सुनो सुनाता हूं प्रभात,
तारों की मधुर कहानी।
देख यही है मेरे उर की,
प्रियतम ! दग्ध निशानी !!

कह देता हूँ नाथ ! यद्यपि,
है बीती बात पुरानी।
अरे किसी दिन इस मरु,
में भी लहराता था पानी।

छलका था मादकता से हाँ,
कभी हमारा प्याला।
देव ! हमारे तममय नभ पर,
भी था कभी उजाला ॥

———
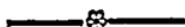
अर्थ मंत्री-माननीय

वाबू अनुग्रहनारायण सिंहजी का

छपरे में स्वागत

स्वागत, शुभ गुण-अयन ! ज्ञान विज्ञान-विभाकर ,
स्वागत, शुभग सुजान शीलता के रत्नाकर ।
स्वागत, स्वागत, स्नेह सौख्य मन्दिर अति सुन्दर ,
स्वागत, स्वागत, कर्म्म निष्ठ नय-नीति गुणाकर ॥

हुई कृपा यह वड़ी अकिंचन गृह लौं आये ।
मन की पूरी हुई आशा आप के दर्शन पाये ॥
अभिनन्दन के साज सजें पर क्यों निर्धन से ।
हम वेसुध ही रहे आज तव प्रिय दर्शन से ॥

———꧁———
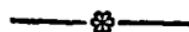
दुलारे हैं।

सुन्दर सुहावन मन भावन लुभावन और,
छविमान माधुरी की खान रूप वारे हैं।
पागल प्रगल्भ प्रेमियों के प्रलाप-पूर्ण,
पावन प्रमत्त कल कल्पना—सहारे हैं॥

नवल-निरंजन जन मन अनुरंजन मंजु,
सज्जन सुशील नव निर्विकार न्यारे हैं।
हारे हृदय हैं हम हाय! इन ही के हाथ,
अजब अनोखे ये सुमन दुलारे हैं॥

अमृत अघोर वरसाते सरसाते रस,
"सुहृद" उदार अलियों के प्राण प्यारे हैं।
चोट करते हैं हो पल्लव पलक के ओट,
शायक मनोज के अचूक अरुणारे हैं॥

शोभा अभार घोर न्यारे नित निहारने को,
प्रकृति दृगों के चल चित्त चोर तारे हैं।
वार वार देख भी न लोचन निहाल होत,
अजब अनोखे ये सुमन दुलारे हैं॥

———

कामना।

भर उमंग से हृदय बढ़ो,
लख जीवन का यह स्वर्ण विहान।
रवि शशि दें निज तेज देवियाँ,
करें तुम्हारा मंगल गान॥

ध्रुव सा धैर्य्य, भीष्म सा व्रत ले,
बनो हठी प्रहलाद समान।
जीवन के कुरुक्षेत्र बीच,
अभिमन्यु सदृश हो बली महान॥

कीर्ति पसारे भूतल भर में,
पुनः कृष्ण बलराम यहाँ।
तेजस्वी लव-कुश घर घर हों,
बंधु लखन श्री राम यहाँ॥

जरा नहालो नवयुग-रवि की,
सुभग ज्योति प्यारी में।
रे गुलाब तू चटक सुरभि,
लेकर मेरी क्यारी में॥

——※——

स्वतंत्रता दिवस ।

वीर जवाहिर की जय जिसने,
ऊँचा किया जननि का भाल ।
सहसा जिस ने जगा दिये,
भारत भर में विप्लव उत्ताल ॥

धन्य देश का भाग्य धन्य,
वह अपनी लाहौरी कांग्रेस ।
जहाँ क्रान्ति ने जन्म ग्रहण कर,
किया पूत भारत का वेश ॥

धन्य धन्य ऋषि साबरमति का,
जिस की कीरति भारी है ।
जिस के पैरों पर स्वदेश का,
कण कण ही बलिहारी है ॥

पराधीनता का बन्धन निज,
उसी रोज सचमुच टूटा,
जिस दिन लंडन की छाया में,
रहने का कुमोह छूटा ॥

वीर जवाहर ने फहराया,
भारत-भू का विजय-निशान।
'जय स्वतंत्र भारत' का जिस दिन,
हम ने मिल कर गाया गान॥

तीस साल की छब्बिस जनवरी,
भारत की रखना है याद।
प्रथम प्रथम चखा स्वदेश ने
उस दिन स्वतंत्रता का स्वाद॥

घर घर उसी रोज मिल हम ने,
राष्ट्रध्वजा फहराई थी।
भरी सभाओं में स्वतंत्रता,
की फूकी शहनाई थी॥

दृढ़ प्रतिज्ञा बन जननि पदों पर,
भक्ति भेंट निज लाई थी।
निज स्वतंत्रता साथ शत्रु की,
हम ने मौत बुलाई थी॥

फूँका शंख जवाहिर ने,
सहसा जग पड़ा स्वदेश महान।
एक साथ गा उठे सभी मिल,
हम सब जय जय हिन्दुस्तान॥

जगे सिक्ख पंजाबी जागा,
सारा विद्रोही बंगाल।
गौरव भूमि विहार जगी औ,
जागा युक्त प्रान्त सुविशाल॥

बम्बई औ मद्रास जगे,
जागा फिर वह गुजरात महान।
छोटी सी बारदोली जागी,
फूँका श्री पटेल ने प्राण॥

जगा हिमालय, विन्ध्यां जागा,
जागे पूर्व पश्चिमी घाट।
भारत महासिन्धु ने जग कर,
ताकी स्वतंत्रता की बाट॥

हुआ निराशा की अँधियालीमय,
उस रजनी का अवसान।
सोत्साह सब जगे हुआ,
जगमग जागृति का स्वर्ण विहान॥

चमक उठी वह ज्योति मगध की,
जगकर वीर विहार उठा।
सहसा ही "राजेन्द्र" रत्न का हो,
सचेत संसार उठा॥

उस रोज से ही प्रान्त में,
कुछ बेकली सी छा गई।
स्वाधीनता संग्राम में कुछ,
जान सी थी आ गई॥

सहसा उठा जग था अहो,
इक्कीस का उत्साह था।
जिस ओर देखो बस उधर,
ही शौर्य्य का सु-प्रवाह था॥

ज्वाला उठी थी जोर कर,
थी देर केवल होम की।
अँगार बन कर थी छिटकती,
तारिकाएँ व्योम की॥

उस काल ही सब देश नेता,
घूमने में पग गये।
जो थे जहाँ बस वे वहीं ही,
काम करने लग गये॥

वे घूमते थे लोक में,
परवा न थी धन धाम की।
चर्चा लगी छिड़ने पुनः,
उस लवण के संग्राम की॥

उस काल ही "राजेन्द्र" सारे,
प्रान्त में थे घूमते।
निर्बोध जन भी प्रेम से,
पद पद्म उन के चूमते॥

जाता जहाँ वह वीर तँह,
उत्साह अपरम्पार था।
उस के इशारे पर लगा,
बस नाचने सुबिहार था॥

कुछ ज्योति गाँधी की सखे,
उस वीर में सचमुच जगी।
"गाँधी बिहारी" ठीक ही,
जनता उसे कहने लगी॥

रहता छिपा कुछ मंत्र है,
उस के अनोखे गान में।
वह फूँकता जादू सदा,
निश्चेष्ट जन के प्राण में॥

किस से करें तुलना अरे,
'राजेन्द्र' बस 'राजेन्द्र' है।
गौरव हमारे प्रान्त का,
वह शक्तियों का केन्द्र है॥

व्यापक रूप।

सुमन विहँस तेरी सुन्दरता,
का बन जाते हैं उपमान।
ऊषा दिखा जाती अधरों की,
तेरी मधुर मधुर मुसकान॥

चन्द्र चन्द्रिका तेरी आभा,
नित्य दिखाती है प्यारे।
शीश फूल सुकुमार चमकते,
हैं नभ में सुन्दर तारे॥

कैसे चित्रित अहा! करूँ मैं,
तेरी वह सुषमा प्यारी।
लज्जित हो रुक चली हाय,
यह लौह लेखनी बेचारी॥

———※———

दुखमयी ऊषा !

निशि का अवसान हुआ था,
ज्योत्स्ना रही लुकाती।
लख चन्द्रदेव का जाना,
तारावलि छिपती जाती॥

खग-वृन्द गान करता था,
जगदीश्वर की स्तुति में।
चकवी-हर्षित होती थी,
निज प्रियतम की स्मृति में॥

था मन्द समीरण बहता,
मलयाचल सौरभ लेकर।
स्पर्श मात्र से जिस के,
सुख मिलता था श्रम खोकर॥

थी प्राची दिशा विहँसती,
आगमन जान प्रिय रवि का।
ध्यानस्थ योगियों का था,
अवसर प्यारा भी कवि का॥

गायें थीं रँभाती,
पय पान कराने शिशु को।
देखा सब ने गद् गद् हो,
वात्सल्य प्रेम मय उन को॥

यद्यपि सुखमय अवसर था,
सब को हर्षाने वाला।
पर था प्रणयी दल का तो,
यह हिय दहलाने वाला॥
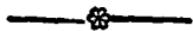
राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद के प्रति

युगल पुण्य आलोक उतर,
भारत में केन्द्री भूत हुआ।
एक बना राजेन्द्र एक से,
गुरु गांधी उद्भूत हुआ॥

गौरव की जग पड़ी किरण,
जाग्रति की ज्योति जगी आई।
युगल सूर्य्य जब उगे तभी,
घर घर में पुण्य विभा छाई॥

चिर विस्मृत प्यारे बिहार के,
बन में बिहँस पड़ा ऋतुराज।
एक पुत्र ने सजा दिये,
जननी के बिखरे से सब साज॥

जब जगदीशपुरी रो सोई,
रुकी कुंवरसिंह की हुंकार।
जिरादेई में हुई प्रतिध्वनि,
सुनी देश ने शान्ति पुकार॥

एकसौतेइस

तू बिहार नभ का अगस्त्य उडु,
भारत का जय हार हुआ।
सारन का चमका सुहाग,
तुझ को पा धन्य बिहार हुआ॥

कलुषपूर्ण युग में तू ने,
तपकानन का शृंगार किया।
कुत्सित भूतल पर स्वर्गिक,
शुभ शान्ति सुमंत्र प्रचार हुआ॥

जब बिहार ब्रज पर सकोप,
आया भूकम्प प्रलय कारी।
सरल प्रजा के लिए बना तू,
नटवर गोवर्धन धारी॥

कीर्ति केतु सप्तम नभ पर,
उड़ता है अहे वीर तेरा।
और चरण चूमने ललकता है,
यह भक्त हृदय मेरा॥

तू त्यागी तपी संयमी है,
तू माता का गलहार हुआ।
पैंतीस कोटि का शीश मुकुट,
भारत भू का शृंगार हुआ॥

राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसाद के प्रति

छिपने को लाख छिपा लेकिन,
आखिर सुगंध संचार हुआ।
चारो दिशि पूजा सजी विहारी,
गांधी का अवतार हुआ॥

मेरे घर का उज्वल प्रकाश तू,
सेवा का व्रत-धारी है।
दीनों दलितों का परम वंधु,
माता का अटल पुजारी है॥

ममता का बंधन तोड़ चला,
समता का बन अनुरागी है।
चल पड़ा वांध कफनी शिर से,
बन कर तू परम विरागी है॥

तेरे तप की ज्वाला कराल में,
देव! देश के दुःख जलें।
तेरे आँसू से सिक्त वृक्ष में,
शीघ्र सुधा-फल मंजु फलें॥

तू राष्ट्रपति! हुँकार भरे,
बलिदानों की लग जाय झड़ी।
कंट जाय कड़ी माता की द्रुत,
हँस पड़े क्षितिज पर मुक्तिघड़ी॥

जय जय कह सारा देश जगे,
माला जय की पहनाने को।
नभ का हम इन्दु उतार सकें,
तेरी आरती सजाने को॥

आह लुटा डाला सब कुछ—
मैंने जग में दानी बनकर।
रक्खा कुछ भी नहीं तुझे,
देने को मेरे चिर-सुन्दर॥

बूँद बूँद कर रिक्त हुआ,
यह रस का छोटा सा प्याला।
तो भी गई न मादकता,
मन बना हुआ है मतवाला॥

क्या दूंगा-जब तू आवेगा,
तोड़ वज्र-कर से यह द्वार?
बीणा के सूने तारों से,
कौन निकालूँगा झंकार?

——❀——